NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D.-5

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Shanti Swaroop Gupt*, M.A., Ph.D.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-5

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-3

Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-4

Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-6

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. साहित्य की अवधारणा 1

2. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय 20

3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : आचार्य एवं उनके सिद्धान्त 50

4. प्रमुख साहित्य, सिद्धान्त और मतवाद 107

5. समालोचना 137

6. हिन्दी आलोचना 164

7. साहित्य की विधाएँ या काव्य-रूप 176

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

M.H.D.-5

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पांच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रत्येक खंड से **दो-दो** प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है। शेष **एक** प्रश्न का उत्तर किसी भी खंड से दिया जा सकता है।*

खण्ड-क

प्रश्न 1. संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य-लक्षणों की चर्चा करते हुए पंडितराज जगन्नाथ द्वारा बताए गए काव्य-लक्षण का निरूपण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, प्रश्न 1

प्रश्न 2. प्रतिभा और कल्पना के साम्य-वैषम्य पर विचार करते हुए सृजनकर्म में उनकी भूमिका का महत्त्व बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 6

प्रश्न 3. अलंकार सम्प्रदाय की शक्ति और सीमाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-31, प्रश्न 1

प्रश्न 4. संस्कृत और हिन्दी आचार्यों के साधारणीकरण संबंधी चिंतन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-24, प्रश्न 4

प्रश्न 5. हिन्दी आलोचना में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-164, प्रश्न 1

खण्ड-ख

प्रश्न 6. प्लेटो और अरस्तू की विचारधारा के अंतर को स्पष्ट करते हुए बताइए कि अरस्तू के प्लेटो के आक्षेपों का समाधान किस प्रकार किया है।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-50, प्रश्न 1, पृष्ठ-55, प्रश्न 4, पृष्ठ-53, प्रश्न 3

प्रश्न 7. वर्ड्सवर्थ की काव्य-भाषा संबंधी मान्यताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-81, प्रश्न 14

प्रश्न 8. टी.एस. इलिइट की परम्परा और प्रज्ञा संबंधी अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-101, प्रश्न 24

प्रश्न 9. स्वछंदतावाद से आप क्या समझते हैं? उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-111, प्रश्न 2

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) शब्द-शक्ति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-16, प्रश्न 11

(ख) मार्क्सवादी आलोचना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-173, प्रश्न 3

(ग) ध्वनि सिद्धांत

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-39, प्रश्न 13

(घ) अस्तित्ववाद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-132, प्रश्न 9

(ङ) उत्तर-आधुनिकतावाद

उत्तर–आधुनिकतावाद की तरह उत्तर-आधुनिकतावाद एक जटिल प्रत्यय है, जिसकी रूपरेखा को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। उत्तर-आधुनिकतावाद का प्रचलन कुछेक दशक पूर्व से होने लगा है अर्थात 1970-1980 के दशक से। सबसे पहले वास्तुकला के क्षेत्र में इसके दर्शन होते हैं। इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय राबर्ट बेंतुरी और जेम्स स्टर्लिंग को जाता है। उन्होंने इसका प्रयोग वास्तुकला की अंतर्राष्ट्रीय शैली के विरोध में किया और आधुनिकता की समाप्ति की घोषणा की गई। फ्रांसीसी उत्तर-संरचनावादियों देल्यूज, दरिदा, माइकेल फुको से इसे अधिक बल मिला। ये लोग आठवें दशक में क्रियाशील थे। वे अनेक अर्थों में एक-दूसरे के विरोधी होते हुए भी कई अर्थों में एक-दूसरे से मिलते-जुलते थे। वे परस्पर विरोधी और विजातीय तथा बहुलवादी चरित्र के समर्थक थे। वे यह नहीं मानते थे कि मनुष्य किसी वस्तुनिष्ठ यथार्थ तक पहुँच सकता है। पर वे

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उस समय को कला और दर्शन तथा सामाजिक परिवर्तन को दृष्टि में रखते हैं।

लियोतार्द ने आधुनिकतावाद का संबंध 'ग्रैंड नेरेटिव' से जोड़ा है जिसमें एक शृंखला एवं समग्रता होती है, आध्यात्मिकता का द्वंद्व होता है। उत्तर-आधुनिकता 'ग्रैंड नेरेटिव' के विरुद्ध का द्वंद्व होता है। उत्तर-आधुनिकता 'ग्रैंड नेरेटिव' के विरुद्ध है इसकी कला में संगति नहीं है, समग्रता नहीं है, अन्विति की जगह बिखराव है। पहले से ही वह स्तालिनवादी मार्क्सवाद के विरुद्ध था। 'पोस्ट-मॉडर्न में वह समाजवादी क्रांति के उद्देश्यों को अस्वीकार करता है। इसके स्थान पर इसका कोई विकल्प ढूँढना कोई अर्थ नहीं रखता, क्योंकि जो कोई विकल्प होगा, वह वही काम करेगा, जिसे हटाकर इसे लाया गया है।

उत्तर-आधुनिकतावाद की मूल प्रवृत्ति आधुनिकतावाद में निहित है। लियोतार्द के मतानुसार उत्तर-आधुनिकतावाद आधुनिकता के भीतर ही एक प्रवृत्ति हैं। वह यथार्थ, क्रमबद्धता और समग्रता की अन्विति को नहीं मानती। कुछ लोग मानते हैं कि आधुनिकतावाद के रचनाकार बहुत प्रतिभा संपन्न हैं। आधुनिकतावाद में पदार्थीकरण, अर्थहीनता और अलगाव है। वे तर्कसम्मत विवेक के आधार पर नए ऐतिहासिक परिवेश को बदलना चाहते थे और सिद्धांतों के साथ यथार्थ को स्वीकार करते थे। हेबरमास उत्तर-आधुनिकतावाद में भी आधुनिकता की कुछ विशिष्टताओं को बनाए रखना चाहता है। उत्तर-आधुनिकतावाद तर्क, यथार्थ, इतिहास, रूप सबको नकारता है। यह एक अराजकतावादी निहलिस्ट प्रवृत्ति है।

■■

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

साहित्य की अवधारणा

1

काव्य लक्षण

प्रश्न 1. संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य लक्षण पर विचार कीजिए।

उत्तर–संस्कृत साहित्य में कवि को मनीषी, परिभूः, स्वयम्भूः, दृष्टा और ऋषि तथा कवि-कर्म को काव्य कहा गया है। काव्य उस विशिष्ट प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति की रचना है, जो रमणीय शैली में अपने भावों को प्रकट करता है और अपनी रचना से सहृदय पाठकों को लोकोत्तर आनन्द प्रदान करता है। काव्य भारतीय वाङ्मय का एक व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत समस्त सृजनात्मक साहित्य नाटक, गद्य साहित्य, पद्य, काव्य, चम्पू आदि अन्तर्भूत हैं। परन्तु विश्व में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का आरम्भ काव्य के रूप में हुआ। आदि कवि वाल्मीकि, होमर आदि की वाणी कविता के रूप में ही प्रस्फुटित हुई, अतः काव्य लक्षण से तात्पर्य है कविता की विशिष्टताएं, उसका स्वरूप विवेचन, उसकी परिभाषा। काव्य लक्षण में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिएँ :

1. उसमें अतिव्याप्ति दोष नहीं होना चाहिए, अर्थात् विषय का अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
2. उसमें अव्याप्ति दोष भी नहीं होना चाहिए अर्थात् उसमें काव्य की सभी विशेषताएं बतानी चाहिए, कोई विशेषता छूटनी नहीं चाहिए।
3. वह सारगर्भित, संक्षिप्त, सूत्रबद्ध तथा अर्थवान होना चाहिए।
4. उसमें कोई पारिभाषिक शब्द नहीं होना चाहिए, जिसे समझने में कठिनाई हो।
5. लक्षण तार्किक, स्पष्ट और सहज बोधगम्य होना चाहिए।

संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य-लक्षण प्रस्तुत करने की परम्परा प्रारंभ से ही मिलती है।

सर्वप्रथम भारत के आदि आचार्य भरत मुनि ने नाटक पर आधारित काव्य-लक्षण प्रस्तुत किये–मृदु ललित पदावली, गूढ़ शब्दार्थहीनता, सर्वसुगमता, युक्तिमत्ता, रस प्रवाहित करने की क्षमता।

भामह–इनके अनुसार शब्द और अर्थ का सहित-भाव काव्य कहलाता है–*शब्दार्थौसहितौकाव्यम्।* इनका यह लक्षण केवल काव्य पर घटित नहीं होता, प्रत्येक प्रकार के सार्थक कथन पर–लोकवार्ता और शास्त्र-कथन पर–भी घटित होता है।

दण्डी–इनके अनुसार, *इष्टअर्थसेपरिपूर्णपदावलीकाव्य काशरीरहै।शरीरसावद्इष्टार्थव्यवच्छिन्नापदावली।* 'इष्ट अर्थ' से उनका तात्पर्य अलंकारजन्य आह्लाद माना जा सकता है। दण्डी का उक्त कथन '*काव्य-शरीर*' का स्वरूप प्रस्तुत करता है, न कि काव्य का। इसमें एक दोष तो यह है कि काव्य का शरीर पदावली नहीं है, अपितु शब्द (वाचक) और अर्थ (वाच्य) दोनों का समन्वित रूप है।

वामन–*काव्यउसशब्दार्थकोकहतेहैं,जोदोषरहितहोतथा जिसमें गुण नित्य रूप से और अलंकार अनित्य रूप से विद्यमान हों, और इसकी आत्मा है रीति।*

आनन्दवर्धन–*काव्यउसशब्दार्थ-रूपशरीरकोकहतेहैं, जिसकीआत्माध्वनि(व्यंग्यार्थ)है।* यद्यपि यह लक्षण काव्य के आन्तरिक तत्त्व ध्वनि की ओर सर्वप्रथम संकेत करता है, किन्तु स्वयं '*ध्वनि*' शब्द अत्यन्त व्याख्यापेक्ष है।

वक्रोक्तिकार–*परस्पर-सम्बद्धशब्दऔरअर्थकाव्यकहलातेहैं, जो कवि के वक्रव्यापार (वक्रोक्ति-युक्त कथनविशेष) से युक्त तथासहृदयजनोंकेआह्लादकबन्धमेंरचेगयेहैं।* इस काव्य-लक्षण में '*वक्रोक्ति*' पर बल दिया गया है, जो कि एक परिभाषिक शब्द होने के कारण सुगम नहीं है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

मम्मट–मम्मट-प्रस्तुत काव्य लक्षण है–"*तददोषौशब्दार्थौ सगुणावनलंकृतीपुनःक्वापि*" अर्थात्, *दोषरहितऔरगुणतथा अलंकार-सहित शब्दार्थ का नाम काव्य है। कहीं-कहीं अलंकार के स्फुट न होने पर भी दोषरहित और गुणसहित शब्दार्थ को काव्य कहाजाताहै।* निष्कर्षतः, उनके अनुसार काव्य में निर्दोषता और सगुणता अनिवार्य तत्त्व हैं और स्फुट सालंकारता वैकल्पिक तत्त्व।

'अदोषौ' विशेषण के सम्बन्ध में प्रमुख आपत्ति यह है कि सर्वत्र नितान्त निर्दोष काव्य की परिकल्पना असम्भव है।

'सगुणौ' विशेषण के सम्बन्ध में विश्वनाथ की दो आपत्तियाँ हैं–(1) यदि '*सगुणौशब्दार्थौ*' से मम्मट का तात्पर्य है कि शब्द और अर्थ रस के व्यंजक (प्रकट करने वाले) हों, तो उन्हें स्पष्टतः '*सरसौ*' कहना चाहिए था। (2) यदि '*सगुणौशब्दार्थौ*' से उनका तात्पर्य है कि शब्द और अर्थ ऐसे हों जो रसानुकूल गुणों के कोमल अथवा कठोर वर्णों के व्यंजक हों, तो यह स्थिति काव्य के स्वरूप का निर्धारण नहीं करती, अपितु उसकी उत्कृष्टता द्योतित करती है।

'अनलंकृती पुनः क्वापि' विशेषण के सम्बन्ध में भी विश्वनाथ का कहना है कि अलंकार भी काव्य के स्वरूप का निर्धारक नहीं है, अपितु उसका उत्कर्षक है।

इस परिभाषा में न रस का संकेत है, न ध्वनि का, न वक्रोक्ति का, केवल गुण का संकेत है।

विश्वनाथ–विश्वनाथ-प्रस्तुत काव्य-लक्षण है–'*वाक्यरसात्मकं काव्यम्*', अर्थात् *ऐसावाक्यजिसकीआत्मारसहै,काव्यकहलाता है।* यहाँ रस से आशय है–रस, भाव, रसाभास, भावाभास, भावोदय, भावसन्धि, भावसबलता और भावशान्ति। यह सत्य है कि काव्य का बहुभाग इन आठ तत्त्वों में समाविष्ट हो सकता है, फिर भी, काव्य का पर्याप्त भाग ऐसा बचा रहता है, जो रस की शास्त्रीय परिधि में समाविष्ट नहीं हो पाता। अतः यह लक्षण अव्याप्ति दोष से दूषित है। इसमें दूसरा दोष यह है कि '*रस*' शब्द भी रीति, ध्वनि '*वक्रोक्ति*' आदि के समान व्याख्या की अपेक्षा रखता है। तीसरा दोष यह है कि रसात्मक '*वाक्य*' अर्थात् पद-समूह को काव्य कहना उचित नहीं है, क्योंकि रसात्मकता की स्थिति '*पद-समूह*' में नहीं हो सकती, शब्दार्थ में, अर्थात् वाचक और वाच्य के समन्वित रूप में ही हो सकती है।

जगन्नाथ–इनके द्वारा प्रस्तुत काव्य-लक्षण है–'*रमणीयार्थप्रतिपादकःशब्दःकाव्यम्*' अर्थात् *वहशब्दजोरमणीयता काप्रतिपादकहैकाव्यकहलाताहै।* '*रमणीयता*' शब्द, न केवल रस का (जो कि अपनी शास्त्रीय परिधि में सीमित है) वाचक है, अपितु काव्य के किसी भी तत्त्व–ध्वनि, गुणीभूत-व्यंग्य, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति–से प्राप्त आनन्द, लोकोत्तर आह्लाद, चमत्कार, आदि सबका वाचक है। इस प्रकार '*रमणीयता*' शब्द '*रस*' की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक है। इसके अतिरिक्त यह रस के समान पारिभाषिक भी नहीं है, अतः व्याख्यापेक्ष भी नहीं है। फिर भी, इस लक्षण में एक दोष है–काव्य में रमणीयता (चमत्कार, आह्लाद, आनन्द, रस) का प्रतिपादक केवल शब्द नहीं हो सकता, अपितु शब्द (वाचक) और अर्थ (वाच्य) का समन्वित रूप ही हो सकता है। अतः यदि उक्त लक्षण को निम्न संशोधित रूप में प्रस्तुत करें, तो यह कहीं अधिक ग्राह्य एवं आदर्श बन सकता है–'*रमणीयताप्रतिपादकौशब्दार्थौकाव्यम्*' अर्थात् रमणीयता का प्रतिपादक शब्द और अर्थ का समन्वित रूप काव्य कहलाता है।

चमत्कारी आह्लाद से पूर्ण रमणीय अर्थों के प्रतिपादक शब्द ही काव्य हैं। इसमें एक दोष यह भी है कि काव्य में सर्वत्र रसानुभूति ही नहीं होती, अन्य अनुभूतियां भी आह्लाद प्रदान करती हैं, जिनसे कभी बौद्धिक आनन्द, तो कभी कल्पनात्मक आनन्द प्राप्त होता है।

प्रश्न 2. पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित काव्य-लक्षण पर विचार कीजिए।

उत्तर–पाश्चात्य काव्यशास्त्र द्वारा प्रस्तुत काव्य के लक्षणों को हम सामान्यतः दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं–वे जो वस्तुपरक हैं और जिनमें काव्य के बाह्य पक्ष पर अधिक बल दिया गया है, तथा वे जो काव्य के आत्म-तत्त्व पर बल देते हैं। पहले वर्ग में प्लैटो, अरस्तू, ड्राइडन, जॉनसन, कार्लाइल, मैथ्यू ऑर्नल्ड प्रभृति द्वारा प्रस्तुत लक्षण आते हैं, तो दूसरे वर्ग में रोमांटिक काव्य-धारा के कवि-आलोचक और मनोवैज्ञानिक आलोचना-पद्धति के विद्वान् आते हैं, जैसे वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, शैली, ले हन्ट, एलन पो आदि। पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आरंभ प्लैटो (427-347 ई.पू.) से होता है।

प्लैटो प्रमुखतः दार्शनिक, राजनीतिज्ञ और समाज-सुधारक थे, अतः उन्होंने काव्य को सौन्दर्यशास्त्र या काव्यशास्त्र की दृष्टि से न देखकर दार्शनिक और समाज-सुधारक की दृष्टि से देखा है। उनका मत है कि भौतिक पदार्थ स्वयं ही सत्य (Idea) की अनुकृति है, फिर काव्य तो इन भौतिक पदार्थों की भी अनुकृति होता है, अतः वह अनुकरण का अनुकरण होने के कारण त्याज्य है। प्लैटो की धारणा है कि वह ऐसे भावों का संपोषण करता है, जो त्याज्य और हेय हैं। उनकी परिभाषा काव्यशास्त्र की दृष्टि से नहीं लिखी गयी है, केवल कविता को आदर्श राज्य से बहिष्कृत करने के उद्देश्य से उन्होंने उसकी व्याख्या की है।

अरस्तू ने सर्वप्रथम काव्यशास्त्रीय दृष्टि से कविता की परिभाषा के सम्बन्ध में कुछ संकेत-सूत्र दिए।

"*Poetry is an imitation of nature through the medium of language.*"

अर्थात् काव्य भाषा के माध्यम से प्रकृति का अनुकरण है। इस परिभाषा में दो शब्द प्रकृति और अनुकरण व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं। प्रकृति से अरस्तू का अभिप्राय बाह्य जड़-जगत् (पर्वत,

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नदी, पशु-पक्षी आदि) तथा अन्तर्जगत् (मानव-भावना, काम, क्रोध आदि) दोनों से है। इसी प्रकार '*अनुकरण*' का अर्थ हू-बहू नकल करना नहीं था।

वह कवि के अनुकरण को भावनामय मानते थे और स्वीकार करते थे कि कवि अपनी संवेदना, अनुभूति, कल्पना, आदर्श आदि का प्रयोग करके अपूर्ण को पूर्ण बनाता है।

इसलिए अरस्तू के '*अनुकरण*' का अर्थ है–मूल का पुनरुत्पादन, जीवन का कलात्मक और भावात्मक पुनः सृजन। अरस्तू की परिभाषा को और अधिक स्पष्ट शब्दों में रखना चाहें, तो कह सकते हैं, "*कविताजीवनऔरजगत्काकल्पनात्मकपुनः सृजनहै।*"

अरस्तू का काव्य-लक्षण अपने आप में अस्पष्ट और अर्ध-व्यक्त (under expressed) है। प्रथम तो अनुकरण शब्द से सृजन अर्थ प्रकट नहीं होता। दूसरे, जैसा डॉ॰ नगेन्द्र ने कहा है प्रकृति और अनुकरण दोनों ही शब्द वस्तु-तत्त्व के महत्त्व की ओर संकेत करते हैं, उसी पर बल देते हैं। अनुकरण का अर्थ पुनः सृजन कर लेने पर भी वस्तु का महत्त्व बना रहता है। यह परिभाषा भाव पक्ष या अनुभूति पक्ष के प्रति उदासीन है।

पुनर्जागरण-काल के बाद आचार्य ड्राइडन ने काव्य की दो परिभाषाएँ दीं। प्रथम में उन्होंने कहा, "*Poetry is articulate music*" अर्थात् कविता स्पष्ट संगीत है। इस परिभाषा में कविता के बाह्य पक्ष के भी केवल एक अंग संगीत-तत्त्व पर बल दिया गया है। संगीत तो कविता का एक पक्ष है और बिना संगीत के भी काव्य लिखा गया है। अतः यह परिभाषा नितान्त अनुपयुक्त है। उनकी दूसरी परिभाषा है–"*Poetry is an imitation of nature by pathetic and numerous speech.*"

यह परिभाषा भी मौलिक न होकर अरस्तू की परिभाषा पर ही आधारित है। ड्राइडन की दोनों परिभाषाओं में कविता के बाह्य पक्ष पर ही बल दिया गया है, उसके आत्म-तत्त्व की ओर इन परिभाषाओं में ध्यान नहीं दिया गया है।

डॉ॰ जॉनसन की कविता की परिभाषा, "*Poetry is a metrical composition*" अर्थात् कविता छन्दमयी वाणी है-कविता का लक्षण न बताकर पद्य (verse) का लक्षण बताती है। कविता का प्राणत्त्व तो भाव है, जिसकी ओर इस परिभाषा में कोई ध्यान नहीं दिया गया है। डॉ. जानसन की दूसरी परिभाषा है–"*Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason.*"

अर्थात् कविता वह कला है, जो कल्पना की सहायता से विवेक द्वारा सत्य और आनन्द का संयोजन करती है। इस परिभाषा में काव्य के सभी तत्त्वों–सत्य, आनन्द, कल्पना, विवेक–को एक-साथ मिलाकर रख दिया गया है। इस परिभाषा से काव्य का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो पाता है। वह काव्य के व्यावर्तक धर्म को स्पष्ट नहीं करती। दूसरे, इस परिभाषा में भी कविता के कलात्मक पक्ष पर ही अधिक बल दिया गया है।

कार्लाइल की कविता की परिभाषा है-"*Poetry, we call musical thought.*"

अर्थात् काव्य संगीतपूर्ण विचार को कहते हैं। इसमें यद्यपि बुद्धि-तत्त्व और संगीत-तत्त्व को ध्यान में रखा गया है, पर काव्य के अन्य तत्त्वों–भाव, कल्पना आदि की उपेक्षा की गई है।

काव्य-लक्षण में वस्तु पर बल देने वालों में सबसे विख्यात हैं मैथ्यू आर्नल्ड। उनकी काव्य-परिभाषा है–"*Poetry is the criticism of life under the condition fixed for such a criticism of life by laws of poetic truth and poetic beauty.*"

अर्थात् काव्य-सत्य तथा काव्य-सौन्दर्य के सिद्धान्तों द्वारा निर्धारित उपबन्धों के अधीन जीवन की समीक्षा का नाम काव्य है। यह परिभाषा लेखक के निजी आदर्श की द्योतक है और जीवन की समीक्षा तथा विचार-तत्त्व पर बल देती है। इस परिभाषा का इस दृष्टि से तो महत्त्व है कि वह काव्य के प्रति कल्याणवादी दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देती है, पर इसमें राग-तत्त्व की ओर कोई संकेत नहीं होता। शास्त्रीय दृष्टि से भी इस परिभाषा का कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि यह सर्वथा अस्पष्ट और उलझी हुई है। इसके निम्नलिखित दोष हैं :

1. इसमें काव्य को, जिसकी स्थिति साध्य की है, साधन बना दिया गया है।
2. इस परिभाषा का '*समीक्षा*' शब्द अतिव्याप्ति दोष से दूषित है, क्योंकि जीवन की समीक्षा को ही यदि काव्य माना जाएगा, तो फिर शास्त्र और दर्शन भी काव्य के अन्तर्गत आ जाएंगे, क्योंकि उनमें भी जीवन की समीक्षा होती है, उनमें भी लेखक जीवन के अनुभवों को ग्रहण करके उन पर अपने ढंग से विचार करता है।
3. यह लक्षण व्याख्याधीन है, क्योंकि काव्य-सत्य तथा सौन्दर्य दोनों को समझना आवश्यक हैं।
4. सामान्यतः लक्षण में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अवांछनीय है। ऑर्नल्ड की इस परिभाषा में यही हुआ है। इसमें काव्य का लक्षण देते समय उन्होंने काव्य-सत्य और काव्य-सौन्दर्य दो पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है, जो काव्य से अधिक सूक्ष्मतर तत्त्व हैं और जिनका अर्थ है क्रमशः कल्पना-तत्त्व और राग-तत्त्व।

सारांश यह है कि इस परिभाषा में अव्याप्ति, अतिव्याप्ति, अस्पष्टता आदि कई दोष हैं।

मिल्टन ने अपने '*Eassy on Education*' में कविता की परिभाषा देते हुए लिखा है–कविता सरल तथा रागात्मक होनी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

चाहिए। इस लक्षण में कविता के तत्त्वों की ओर निर्देश न होकर उसके गुणों की ओर संकेत है, अतः इसे वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता।

दूसरा वर्ग उन विद्वानों का है, जिन्होंने अपने लक्षणों में काव्य के भाव-तत्त्व पर बल दिया है। इनमें रोमांटिक-काल के कवि-आलोचक वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, शैली आदि हैं। अतः उन्होंने कविता की परिभाषा उसके निर्माण की प्रक्रिया तथा कवि के व्यक्तित्व के आधार पर की; वह वस्तुपरक न होकर व्यक्तिपरक है।

अंग्रेजी में रोमांटिक-युग के प्रवर्त्तक वर्ड्सवर्थ ने काव्य की परिभाषा दी है-"*Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings. It takes its origin from emotions recollected in tranquility.*"

अर्थात् कविता शान्ति के क्षणों में स्मरण किये हुए प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन है। यह परिभाषा अत्यन्त प्रभावशाली है, परन्तु इसमें निम्नलिखित दोष हैं :

1. प्रथम तो प्रश्न उठता है कि क्या शान्ति के क्षणों में स्मृत सभी मनोवेग, जैसा कि इस लक्षण में मान लिया गया है, काव्य हो जाते हैं। स्पष्ट है कि सभी मनोवेग काव्य नहीं हो सकते। मनोवेगों के अनुभूति और भाव बन जाने पर ही और कवि द्वारा भावोद्रेक प्रकट करने पर ही काव्य-सृष्टि होती है। कविता भाव का पुनः स्मरण नहीं, पुनः सृजन है। इस परिभाषा में अभिव्यंजना-तत्त्व की उपेक्षा है।
2. प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन कभी कविता नहीं बन सकता, क्योंकि दुःख के क्षणों के आँसू, कम्प, विलाप आदि तथा सुख के क्षणों में उल्लास आदि भावों का सहज उच्छलन तो होता है, पर वह कविता नहीं है। अतः यह परिभाषा अतिव्याप्ति के दोष से आक्रांत है।
3. परिभाषा में '*Recollected*' शब्द स्पष्ट नहीं है।

इन सब दोषों के होते हुए भी इस परिभाषा का महत्त्व है, क्योंकि इसमें कवियों की काव्याभिव्यक्ति की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। यह ठीक है कि मनोवेगों के आवेग के समय काव्य की अभिव्यक्ति नहीं होती, वरन् जब मनोवेग अनुभूति एवं भाव बन जाते हैं, तब कवि की वाणी काव्य बन जाती है।

अंग्रेजी के मूर्धन्य आलोचक और कवि कॉलरिज ने काव्य की परिभाषा दी है-"*Best words in best order.*"

अर्थात् उत्तम शब्दों के उत्तम रचना-विन्यास को कविता कहते हैं। यह परिभाषा भी अस्पष्ट है। इस कथन में कविता को केवल उक्तिरूप कहा गया है, उसके भाव रूप और आत्मा की उपेक्षा की गई है। यह लक्षण व्याख्या-सापेक्ष भी है, क्योंकि उत्तम शब्दों तथा उत्तम क्रम को समझे बिना लक्षण स्पष्ट नहीं होगा।

कॉलरिज की दूसरी परिभाषा है-"*It (Poetry) is the excitement of emotion for the purpose of immediate pleasure through the medium of beauty.*"

यह परिभाषा निश्चय ही पूर्ण एवं स्पष्ट लक्षण प्रस्तुत करती है और कविता के लक्ष्य की ओर भी संकेत करती है।

पी.बी. शैली के अनुसार, '*काव्यकल्पनाकीअभिव्यक्तिहै।*' इस परिभाषा में भाव-पक्ष की उपेक्षा है, क्योंकि कल्पना तो भावों को संवेद्य बनाने का माध्यम है। कल्पनामयी उक्तियाँ, जिनमें भाव या अनुभूति न हो, प्रहेलिका या चित्र-काव्य बन सकती है, काव्य नहीं। अतः यह लक्षण उपयुक्त नहीं है।

शैली की दूसरी परिभाषा है-"*Poetry is the record of the best and the happiest moments of the happiest and the best minds.*"

अर्थात् कविता सर्वसुखी और सर्वोत्तम मनों के सर्वोत्तम और सर्वसुखपूर्ण क्षणों का लेखा है। इस लक्षण में पहली शंका तो यह उठती है कि सबसे सुखी और सबसे उत्तम मन कौन है और उसे कैसे पहचाना जायेगा?

19वीं शताब्दी के अन्त में ले हन्ट ने कहा था-"*Poetry is imaginative passion.*" अर्थात् कल्पनात्मक मनोवेग का नाम कविता है। यदि इस परिभाषा से उनका अभिप्राय यह है कि कल्पना के द्वारा मनोवेग की अभिव्यक्ति कविता है, तो यह लक्षण पर्याप्त उपयुक्त है। पर यदि उनका अभिप्राय है कि कल्पना द्वारा भाव के संस्कार को उद्बुद्ध करना ही कविता है, तो यह लक्षण अपूर्ण एवं अपर्याप्त है, क्योंकि भाव के संस्कार को उद्बुद्ध करना तो काव्य का प्रथम अवस्थान है। जब तक बाह्य उपकरणों द्वारा उसकी अभिव्यक्ति नहीं होगी, तब तक वह काव्य नहीं बन पाएगा। उनकी दूसरी परिभाषा अधिक जटिल तथा अस्पष्ट है।

कविता सौन्दर्य, शक्ति और सत्य के लिए कहा गया भाववेगपूर्ण कथन है जिनमें कल्पनामय चित्रण और भाषा में एकता में विविधता के सामंजस्य की विशेषता का समावेश हो। कविता में उत्कट वासना का ही कथन नहीं होता, तटस्थ रूप से सौन्दर्य और सत्य का वर्णन होता है। भाषा के सम्बन्ध में तो यह लक्षण अत्यन्त जटिल और अस्पष्ट है। सारांश यह है कि कविता की अनेक विशेषताओं को प्रकट करती हुई भी यह परिभाषा पूर्ण और आदर्श नहीं कही जा सकती। वह गीतिकाव्य की परिभाषा अधिक प्रतीत होती है, कविता की कम।

सौन्दर्यवादी कवि एडगर ऐलन पो ने कविता की परिभाषा देते हुए कहा है-"*I would define in brief the poetry of words as the rhythmical creation of beauty.*"

अर्थात् काव्य-सौन्दर्य की लयपूर्ण सृष्टि है। इस परिभाषा में लय का अर्थ स्पष्ट नहीं है। लय शब्द बहुत व्यापक है। प्रत्येक

www.neerajbooks.com